International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 5, Sep.-Oct., 2024, pp: 213-215 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

स्त्री विमर्श : अवधारणा एवं आलोचना के आयाम

आराधना सिंह
हिंदी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय,

Date of Submission: 02-09-2024 Date of Acceptance: 14-09-2024

शोध सार
आज साहित्य जगत में सर्वाधिक चर्चा स्त्री विमर्श की हो रही है। सदियों से होते आए शोषण, दमन के प्रति स्त्री चेतना ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया है। स्त्री विमर्श एक तरह का साहित्यिक आंदोलन है, जिसके केंद्र में समानता का अधिकार, स्त्री अस्मिता, अस्तित्व, स्वतंत्रता और मुक्ति का सवाल है।

स्त्री विमर्श दो शब्दों से मिलकर बना है– स्त्री और विमर्श। स्त्री का अर्थ है–महिला, नारी, औरत, लड़की अर्थात् लिंग के आधार पर स्त्री होना तथा विमर्श का अर्थ है– सोच–विचार, विनिमय तथा विवेचन भोलानाथ तिवारी के अनुसार– "विमर्श का अर्थ है तबादला–ए–ख्याल, परामर्श, मशविरा, राय–बात, विचार–विनिमय, विचार– विमर्श, विचार।"1 स्त्री विमर्श, विमर्श या बहस का मुद्दा नहीं है चेतना और जाग्रति का मुद्दा है। इसमें परंपरा और आधुनिकता दोनों हैं। स्त्री की विभिन्न समस्याएँ, उनके अपने सवाल, अपने अधिकार सब स्त्री विमर्श के अंतर्गत शामिल है। स्त्री विमर्श और कुछ नहीं बल्कि आत्म चेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और समानाधिकार की पहल का दूसरा नाम है। प्रभाखेतान ने स्त्रीविमर्श या नारीवाद के विषय में कहा है कि– "नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूँजीवाद है। स्त्री हर जगह है, हर वाद में है, फैलाव में है, मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण की इस पारंपरिक प्रक्रिया को पुरुष दृष्टि से नहीं बल्कि स्त्री दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।" 2 कि कात्यानी का विचार है कि– ''स्त्री विमर्श अथवा स्त्रीवाद पुरुष और स्त्री के बीच नकारात्मक भेदभाव की जगह स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करता है। वस्तुतः इस रूप में देखा जाए तो स्त्री विमर्श अपने समय और समाज के बीच जीवन की वास्तविकताओं तथा संभावनाओं को तलाश करने वाली दृष्टि है।" [3]

मुख्य शब्द :– स्त्री विमर्श, अवधारणा, आयाम, चेतना, अस्मिता ।

स्त्री विमर्श : अवधारणा

स्त्री विमर्श एक प्रकार से रूढ़ परंपराओं, मान्यताओं के प्रति असंतोष और उससे मुक्ति का स्वर है। पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे नैतिक मापदण्डों, मूल्यों व अंतर्विरोधों को समझने व पहचानने की गहरी अंतर्दृष्टि है। समाज में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों को राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक समानता का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप स्त्रियों द्वारा आंदोलन किये गये और इसे ही स्त्रीवाद कहा गया। इसके लिए अंग्रेजी में Feminism (फेमिनिज्म) शब्द का प्रयोग किया जाता है। Feminism (स्त्रीवाद) का अर्थ है– "ऐसा विश्वास या सिद्वान्त कि स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिये।" 4 सर्वप्रथम यह आंदोलन ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका से प्रारंभ हुआ। 18 वीं सदी में यह आंदोलन मानवतावाद और औद्योगिक क्रांति के समय से शुरू हुआ था।

स्त्री विमर्श को चिंतनधारा के रूप में 20वीं शताब्दी में स्थान मिला। स्त्री विमर्श और स्त्रियों के विषय में सोचने वाले लेखकों में 'जॉन स्टुअर्ट मिल' का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। इन्होंने अपनी पुस्तक 'द सब्जेक्शन ऑफ विमेन' द्वारा नारी मुक्ति और उसके मताधिकारों के लिए आवाज उठाई। यूरोप में स्त्री मुक्ति की लड़ाई में 'सीमोन द बोउवार' की प्रसिद्ध पुस्तक 'The Second Sex' (1949 ई0) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सीमोन द बोउवार का यह विचार था कि पुरुष वर्चस्व के सामंती सोच के कारण ही धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों ने स्त्री को समाज में दोयम दर्जे का बना दिया है। स्त्री को अपने हक और अधिकारों की लड़ाई के लिए धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति प्राप्त करनी ही होगी।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 5, Sep.-Oct., 2024, pp: 213-215 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

ष्जीम ैमबवदक ैमगष का हिंदी अनुवाद 'स्त्री उपेक्षिता' के नाम से प्रभा खेतान ने सन् 1999 ई0 में किया था। समकालीन दौर में लेखिकाओं ने स्त्री की स्वतंत्रता, अस्मिता और समानता के प्रश्न को प्रभावशाली ढंग से साहित्य में प्रस्तुत किया है। महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में परिवार से लेकर राष्ट्र निर्माण तक स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य, सामाजिक समानता और शिक्षा आदि को सर्वोपरि माना है। महादेवी वर्मा कहती हैं कि ''स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है, न देवता की मूर्ति बनकर प्राण प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह जान गयी है कि एक का अर्थ अन्य की शोभा बढ़ाना है तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाना है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पुजापे को देखते रहना है, जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बाँट लेंगे।" [5]

स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है, जो जाति, धर्म, वर्ग, वंश, प्रांत और देश आदि से हटकर है। इस विमर्श में स्त्री अपने ऊपर हो रहे अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न और उपेक्षा आदि का विरोध करती है। क्षमा शर्मा ने स्त्री विमर्श के विषय में कहा है कि ''स्त्री विमर्श स्त्री की अस्मिता के साथ ही उसमें चेतना का, अन्याय के विरोध का, अस्तित्व बोध का और उसके अत्याचार के विरोध में खड़े रहने की लड़ाकू वृत्ति का न केवल परिचय देता है अपितु स्त्री चिंतन को बल प्रदान करता है। वर्तमान नारी आर्थिक रूप से स्वयं पूर्ण बनती जा रही है। आत्मगौरव, अस्तित्व, चेतना, आत्मनिर्भरता ने नारी को आत्म विश्वासी व सशक्त बना दिया है।" 6 मैत्रेयी पुष्पा स्त्री विमर्श के विषय में कहती हैं कि "नारीवाद ही स्त्री विमर्श है। नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री विमर्श है।" [7]

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श 20 वीं शताब्दी के लगभग अंत में ज्यादा उभरकर सामने आया है। अनेक लेखक व लेखिकाओं की रचनाओं ने स्त्री विमर्श को लेकर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसे– श्रृंखला की कड़ियाँ, 1942 (महादेवी वर्मा), उपनिवेश में स्त्री, 2003 (प्रभा खेतान), स्त्रीत्व विमर्शः समाज व साहित्य 2002 (क्षमा शर्मा), औरत के लिए औरत, 2003 (नासिरा शर्मा), खुली खिड़कियाँ, 2003 (मैत्रेयी पुष्पा), हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, 2003 (सुमन राजे) आदि के अलावा प्रेमचंद, जैनेंद्र, यशपाल, अज्ञेय, भगवती चरण वर्मा से लेकर मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, अनामिका तथा मृदुला गर्ग आदि की रचनाओं में स्त्री विमर्श देखने को मिलता है।

साहित्य में स्त्री विमर्श का अर्थ, मात्र स्त्री या पुरुष द्वारा स्त्री के ही विषय में, स्त्री विषयक मुद्दों में लिखा गया साहित्य नहीं है, बल्कि स्त्री जीवन की सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं, विडंबनाओं को अभिव्यक्त करना और उस पर विचार करना स्त्री विमर्श है। आज स्त्री विमर्श पहले की भाँति नहीं रहा है बल्कि आज यह भूमंडलीकरण और संचारक्रांति से उत्पन्न हुयी नई–नई समस्याओं को लेकर चलता है। स्त्रीवादी लेखन का अर्थ केवल स्त्री के संबंध में या स्त्री द्वारा लिखा गया लेखन तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह उन तमाम मुद्दों पर भी बहस करता है जिन पर स्त्री अपनी बातों को प्रकट करती है।

स्त्री विमर्श : विविध आयाम

स्त्री विमर्श का संबंध स्त्रियों से जुड़े सवालों से तो है ही लेकिन स्त्री विमर्श इन्हीं सवालों तक सीमित नहीं है। स्त्री वादियों की चिंता का घेरा बलात्कार, पत्नी प्रताड़ना, फैमिली प्लानिंग व समान वेतन की संकरी परिभाषा में घिरा या सिमटा हुआ नहीं है। हममें से अनेक का विश्वास है कि संसार के हर मुद्दे का संबंध स्त्रियों से है क्योंकि हर बात, हर घटना उन्हें प्रभावित करती है। वे स्त्री होने के साथ–साथ मनुष्य हैं, संसार की आधी जनता हैं अतः हर विषय उनसे संबंध रखता है। स्त्रीवादी सभी प्रकार की असमानता, दबाव दमन हटाकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय रूप से समतामूलक न्यायिक – सामाजिक – आर्थिक व्यवस्था से युक्त समाज की स्थापना करना चाहते हैं। अतः सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि सभी मुद्दे स्त्री विमर्श से संबंधित हैं। स्त्री विमर्श के विविध आयाम निम्नलिखित हैं–

- लिंग – भेद समाप्ति पर जोर।
- समान अवसर की मांग–
  - शिक्षा के क्षेत्र में
  - रोजगार के क्षेत्र में
- पुरुष वर्चस्ववाद को समाप्त करना।
- सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति ।
- शोषण से मुक्ति (पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक)

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 5, Sep.-Oct., 2024, pp: 213-215 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

समाज में लैंगिक असमानता सदियों से चली आ रही है। लैंगिक असमानता का तात्पर्य लैंगिक आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव से है। परंपरागत रूप से समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता रहा है। वे घर और समाज दोनों जगहों पर शोषण, अपमान और भेदभाव से पीड़ित होती हैं। लिंग के आधार पर महिलाओं के साथ हर क्षेत्र में चाहे वो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोरंजन कोई भी क्षेत्र हो, भेदभाव होता है। स्त्री विमर्श इस लिंग भेद की समाप्ति पर जोर देता है।

स्त्री विमर्श ने नारी शिक्षा की समस्या को भी गम्भीर रूप से उठाया है। शिक्षा के द्वारा ही युगों–युगों से पीड़ित, शोषित आधारहीन स्त्री अपने पैरों पर खड़े होने योग्य बन सकती है। परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों के साथ–साथ अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक हो सकती है भारतीय परिवार का पुरुष वर्चस्ववादी ढांचा स्त्रियों की दीन दशा के लिए काफी हद तक उत्तरदायी है। स्त्री विमर्श अपनी मूल चेतना में स्त्री को पराधीन बनाने वाली पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था का भी विरोध करता है। समाज में परिवार जनतांत्रिक आधारों पर नहीं वरन् पुरुष मुखिया की निरंकुश सत्ता पर आधारित होता है। परिवार के सभी अहम फैसले शिक्षा, विवाह, संपत्ति आदि से संबंधित सभी निर्णय सिर्फ पुरुष के ही होते हैं।

स्त्री विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण आयाम स्त्रियों को सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति दिलाना भी है। समाज में आज भी कहीं न कहीं स्त्री को दोयम दर्जे का प्राणी समझा जाता है। नारी की बुद्धि पर पुरुष प्रश्न चिह (?) लगाता है और हमेशा से लगाता आया है। उसे बुद्धिहीन, सौन्दर्य की मूरत, वासना की कामना दृष्टि से ही देखता रहा है। लेखिकाओं ने साहित्य के माध्यम से स्त्री की सामाजिक चेतना को जाग्रत करने का प्रयास किया है। मन्नू भंडारी की कहानी ''रानी माँ का चबूतरा'' एक स्त्री के स्वाभिमान, ईमानदार, कर्त्तव्य परायण तथा आत्मनिर्भरता की कहानी है।

स्त्री विमर्श का एक प्रमुख बिंदु है– शोषण से मुक्ति । चाहे वह स्त्रियों का शारीरिक शोषण हो, मानसिक रूप से शोषण हो, धार्मिक या सामाजिक रूप से शोषण हो या फिर चाहे वह आर्थिक रूप से शोषण हो। आर्थिक और सामाजिक जगत पुरुषों का अधिकार क्षेत्र रहा है, लेकिन जब से स्त्री विमर्श पैरोकारों ने महिला को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने बनने में पहल की है, तब से स्त्री भी पुरुष की तरह उतनी ही जिम्मेदारियाँ उठाने व सोंचने लगी है, अब औरत कमाती है, खर्च करती है तथा पैसा बचाने का न सिर्फ सोचती है अपितु बचाती भी है।

पहले स्त्रियाँ लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही थी, जिसके अंतर्गत शिक्षा व रोजगार का अधिकार, संपत्ति के मालिक होने का अधिकार, मतदान का अधिकार, संसद में प्रवेश पाने का अधिकार, तलाक का अधिकार आदि खास मुद्दे थे, लेकिन आज स्त्रीवाद के अंतर्गत घर के भीतर स्त्री पर पुरुष के दबाव और अधिकार के विरुद्ध संघर्ष, परिवार द्वारा उनके शोषण के विरुद्ध संघर्ष, कार्य स्थान में उनकी गिरी हुई स्थिति, समाज, संस्कृति और धर्म के द्वारा दिए गये नीचे दर्जे के विरुद्ध संघर्ष तथा बच्चे पैदा करने और पालने के साथ–साथ उत्पादन के दोहरे बोझ के विरुद्ध संघर्ष भी शामिल है।

संदर्भ सूची

1. तिवारी, सं0 भोलानाथ, हिंदी पर्यायवाची कोश, पृ0सं0 572

2. खेतान, प्रभा, हंस पत्रिका, अक्टूबर 1996, पृ0सं0 76

3. कात्यायनी, हंस पत्रिका, मार्च 2000, पृ0सं0 95

4. कुमार, सुरेश व सहाय, रामनाथ, अंग्रेजी–हिंदी–शब्दकोश, ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी, प्रेस 2008, पृ0सं0 437

5. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1999, पृ0सं0 69

6. शर्मा, क्षमा, स्त्रीत्व विमर्श : समाज व साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

7. पुष्पा, मैत्रेयी, हंस पत्रिका, सं0 राजेंद्र यादव, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, अक्टूबर 1996, पृ0सं0 75